

जो देखकर भी
नहीं देखते



हेलेन केलर

मुख्य बिंदु

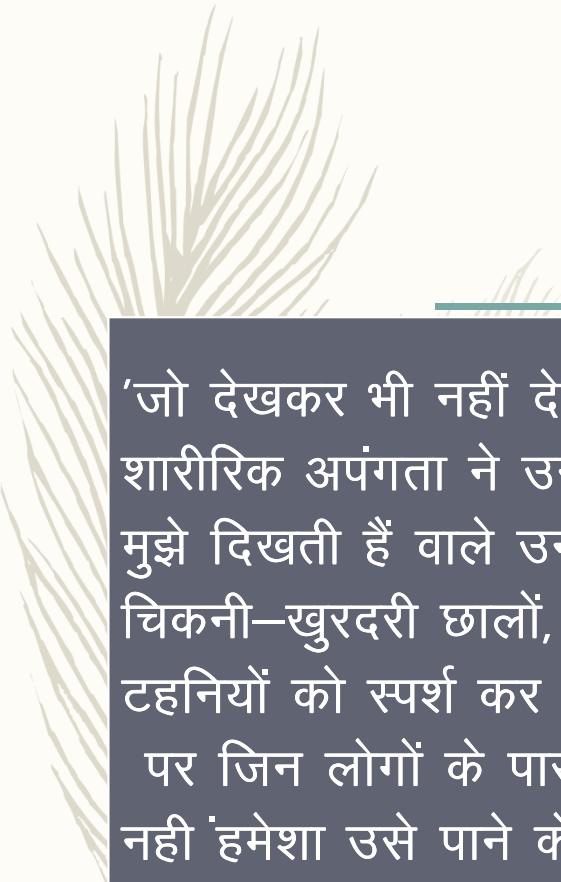
पाठ हेलेन केलर के अनुभव पर आधारित है।

लेखिका ने प्रकृति के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया है।

मनुष्य के पास जो चीजे हैं उनकी कद्र नहीं करता और न ही संवेदनाओं को महसूस करता है।

लेखिका का मानना है जिसके पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं वे बहुत कम देखते हैं।

लेखिका बिना देखे ही प्रकृति की चीज़ों को महसूस कर सकती हैं।



पाठ का सार

‘जो देखकर भी नहीं देखते’ हेलेन केलर द्वारा लिखा हुआ पाठ है। जो स्वयं नेत्रहीन हैं पर शारीरिक अपंगता ने उनका रास्ता नहीं रोका बल्कि सोचने पर विवश कर दिया कि जो चीज़ें मुझे दिखती हैं वाले उन चीज़ों को क्यों नहीं देख पाते। लेखिका स्पर्श करके पेड़ों की चिकनी—खुरदरी छालों, फूलों की बनावट, मखमली सतह आदि को पहचान लेती थी। वह टहनियों को स्पर्श कर चिड़ियों की चहचहाट को भी महसूस कर लेती।

पर जिन लोगों के पास क्षमता है वो अपनी क्षमताओं की कद्र नहीं करते। जो चीज़ें उनके पास नहीं हमेशा उसे पाने के लिए भागते रहते हैं। लेखिका को इस बात का बहुत दुख है। ईश्वर से देखने के मिले आशीर्वाद को साधारण समझते हैं जबकि इससे वे अपनी जिंदगी को इंद्रधनुषी रंगों से भर सकते हैं।